# कला, संस्कृति और महिला सशक्तिकरण को समर्पित उज्जैन की डॉ. खुशबू

**उज्जैन। महाकाल की पावन नगरी उज्जैन केवल आस्था का केंद्र ही नहीं, बल्कि कला और संस्कृति की समृद्ध परंपराओं के लिए भी जानी जाती है। इसी पवित्र धरती की बेटी एक कथक साधिका डॉ. खुशबू पांचाल पिछले करीब 27 वर्षों से भारतीय शास्त्रीय नृत्य के माध्यम से संस्कृति और समाज को जोड़ने का कार्य कर रही हैं। उनका मानना है कि कथक केवल नृत्य नहीं, बल्कि साधना, संस्कार और भारतीय परंपरा का जीवंत रूप है।**

उज्जैन में जन्मी और पली-बढ़ी इस कथक कलाकार खुश्बू पांचाल ने बचपन से ही नृत्य को अपना जीवन बना लिया। वर्षों की साधना और निरंतर अभ्यास के बल पर उन्हें देश के विभिन्न मंचों पर भारतीय शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत करने का अवसर मिला। हालांकि उनके लिए सबसे बड़ा मंच हमेशा उनकी जन्मभूमि उज्जैन ही रहा है, क्योंकि इसी शहर की मिट्टी ने उन्हें पहचान दी और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी।

वे मानती हैं कि कला केवल मंच तक सीमित नहीं होती, बल्कि समाज को जोड़ने और जागरूक करने की भी एक बड़ी शक्ति होती है। इसी सोच के साथ उन्होंने संस्था के माध्यम से कलाकारों को मंच देने और नई प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है, ताकि स्थानीय कलाकारों को भी पहचान मिल सके।

सामाजिक कार्यों में भी उनकी विशेष रुचि है। खास तौर पर महिलाओं और बेटियों के लिए काम करना उन्हें बेहद प्रिय है। उनका मानना है कि जब एक महिला सशक्त होती है तो उसका प्रभाव केवल एक परिवार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरा समाज मजबूत बनता है। इसी उद्देश्य से वे समय-समय पर महिलाओं और बेटियों के लिए प्रशिक्षण, आत्मविश्वास बढ़ाने और सुरक्षा से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन करती रही हैं।

उनका कहना है कि देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, लेकिन अक्सर उन्हें सही अवसर और दिशा नहीं मिल पाती। इसी कारण वे चाहती हैं कि उज्जैन केवल धार्मिक पहचान तक सीमित न रहे, बल्कि कला, संस्कृति और प्रतिभा के लिए भी पूरे देश में पहचाना जाए। वे चाहती हैं कि यहां के कलाकारों को देश और दुनिया के बड़े मंचों तक पहुंचने का अवसर मिले।

### सीमित संसाधनों के बाद भी दिखाई प्रतिभा

सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने हमेशा सकारात्मक प्रयास किए हैं और भविष्य में भी इस दिशा में लगातार कार्य करने का संकल्प रखा है। उनका विश्वास है कि यदि उन्हें व्यापक स्तर पर कार्य करने का अवसर और सहयोग मिला, तो वे अपनी ऊर्जा और अनुभव के साथ कलाकारों, महिलाओं और समाज के लिए और भी बड़े स्तर पर योगदान दे सकेंगी। उनका सपना है कि आने वाले समय में जब उज्जैन का नाम लिया जाए तो लोग केवल महाकाल की नगरी के रूप में ही नहीं, बल्कि यहां की जीवंत कला, सशक्त महिलाओं और उभरती प्रतिभाओं के लिए भी इसे याद करें। उनका मानना है कि यदि उनकी छोटी-सी कोशिश भी इस दिशा में एक मजबूत कदम बन सके, तो यही उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

# गेहूं उपार्जन नीति में संशोधन की मांग

**उज्जैन।** मध्य प्रदेश राज्य शासन द्वारा वर्ष 2026-27 के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर गेहूं खरीदी हेतु निर्धारित जेवीएस नीति में संशोधन और सुझावों को लेकर मध्य प्रदेश निजी वेयरहाउस ओनर्स एसोसिएशन ने भोपाल में विभागीय अधिकारियों को ज्ञापन सौंपा।

एसोसिएशन के अध्यक्ष डीपी भाईजी के नेतृत्व में पदाधिकारियों ने वल्लभ भवन में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग की प्रमुख सचिव रश्मि अरुण शमी से मुलाकात कर उन्हें नीतिगत सुझावों का ज्ञापन दिया।

ज्ञापन सौंपते हुए अध्यक्ष डीपी भाईजी ने मांग रखी कि वेयरहाउस स्तरीय गेहूं उपार्जन केंद्रों पर संचालकों का कमीशन पूर्व की भांति 13.50 रुपये प्रति क्विंटल किया जाए। इसके साथ ही गेहूं का नमी प्रतिशत निकालने की एसओपी प्रक्रिया का सरलीकरण करने, गेहूं के गेन लॉस पर लगने वाली 1.5 प्रतिशत पेनल्टी को समाप्त करने और जिन वेयरहाउसों का 6 माह से अधिक का मासिक किराया बकाया है, उसका शीघ्र भुगतान करने की मांग प्रमुखता से उठाई गई। मांगों को लेकर पदाधिकारियों ने विंध्याचल भवन में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के संचालक कर्मवीर शर्मा को भी ज्ञापन दिया। इस दौरान सहायक संचालक एसके पुरोहित ने भी पदाधिकारियों के साथ बैठक की।

## एक नजर में

### अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर 55 महिलाओं को मिलेगा महादेवी वर्मा साहित्य सेवा सम्मान

#### 15 मार्च को होगा 45वां राष्ट्रीय संचेतना महोत्सव

**उज्जैन।** राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना उज्जैन और जगदीश साहित्य संस्थान प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में आगामी 15 मार्च, रविवार को 45वां राष्ट्रीय संचेतना महोत्सव आयोजित किया जाएगा। प्रयागराज के जॉर्ज टाउन स्थित कमला नेहरू मार्ग की हिंदुस्तानी एकेडेमी में होने वाले इस आयोजन के तहत 10वां अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह भी मनाया जाएगा। इस अवसर पर आधुनिक मीरा के नाम से विख्यात श्रेष्ठ कवयित्री महादेवी वर्मा की जयंती के उपलक्ष्य में 55 महिलाओं को महादेवी वर्मा साहित्य सेवा सम्मान से अलंकृत किया जाएगा। समारोह संयोजक डॉ. प्रभु चौधरी, उज्जैन ने बताया कि कार्यक्रम में संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा, उज्जैन मुख्य वक्ता होंगे। आगरा के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. राजेंद्र मिलन मुख्य अतिथि होंगे, जबकि अध्यक्षता जगदीश साहित्य संस्थान के अध्यक्ष मनमोहन सिंह तन्हा करेंगे। विशिष्ट अतिथियों में कोलकाता की सुनीता मंडल, आकाशवाणी उद्घोषिका सुधा शर्मा, भिलाई के हरिप्रकाश गुप्ता, आगर मालवा के दशरथ मसानिया, अल्पना दीक्षित, राजिन्दर सिंह बेदी, उर्वशी उपाध्याय, शिवा लोहारिया, भोपाल की प्रतिभा मिश्रा और जगदीश कौर शामिल होंगी। तीन सत्रों में होगा आयोजन- आयोजन को तीन अलग-अलग सत्रों में विभाजित किया गया है। शुभारंभ सत्र में राष्ट्र के विकास में नारी शक्ति का योगदान विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। इसके बाद द्वितीय सत्र में अखिल भारतीय बहुभाषी कवि सम्मेलन आयोजित होगा, जिसमें देशभर से आए कवि-कवयित्रियां अपनी रचनाएं प्रस्तुत करेंगे। वहीं, अंतिम व समापन सत्र में 55 साहित्यकारों को अतिथियों द्वारा महादेवी वर्मा साहित्य सेवा सम्मान प्रदान किया जाएगा।

इन्हें मिलेगा सम्मान- सम्मानित होने वाले साहित्यकारों और समाजसेवियों में मधुकरराव, प्रेरणा उबाले, मोहिनी गुप्ता, सूरज काले, दिव्या मेहरा, शिवा लोहारिया, दीप्ति गुप्ता, साक्षी जैन, सुगम गवली, अन्नपूर्णा मालवीय, माया मेहता, दक्षा जोशी, संगीता केसवानी, इंदू दुबे, तृप्ति शर्मा, आभा गुप्ता, पल्लवी द्विवेदी, तृप्ति शाह, अरूणा सराफ, श्वेता मिश्रा, सुधा शर्मा और प्रतिभा मिश्रा आदि के नाम शामिल हैं। इन सभी को अतिथियों द्वारा अभिनंदन पत्र, स्मृति चिह्न और अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।

### राधा-कृष्ण जोड़ी प्रतियोगिता रही आकर्षण

**महू.** सर्व ब्राह्मण महिला मंडल किटी ग्रुप द्वारा शुक्रवार को अभिनव होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया. इसमें खाटू श्याम बाबा का दरबार सजाया गया तथा भजनों की आनंदमयी प्रस्तुति के बीच महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की. भजन मंडली द्वारा प्रस्तुत एक से बढ़कर एक भजनों पर राधा संग गोपियों के रूप में महिलाओं ने आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किए. करीब 70 से अधिक महिलाओं की भागीदारी वाले इस तीन घंटे के कार्यक्रम में राधा-कृष्ण की मोहक जोड़ी और मैचिंग जोड़ी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जो समारोह का मुख्य आकर्षण रही. मैचिंग जोड़ी प्रतियोगिता में रीना मुद्गल-आरती शर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि नीता जोशी-मीनाक्षी जोशी द्वितीय स्थान पर रहीं. वहीं, राधा-कृष्ण जोड़ी प्रतियोगिता में अंजली शर्मा-सोनाली शर्मा, नेहा शर्मा-कविता शर्मा तथा नीतू व्यास-प्रियंका शर्मा ने आकर्षक प्रस्तुति देकर सराहना प्राप्त की. प्रतियोगिता की निर्णायक शकुंतला विजयवर्गीय, रचना विजयवर्गीय, निर्मला यादव और ऊषा विजयवर्गीय रहीं. कार्यक्रम में समिति की अध्यक्ष डॉ. स्वर्णा दुबे, सचिव दीपा पाठक, आरती शर्मा, रीता उपमन्यु, शोभा व्यास, मधु दुबे, स्वाति शर्मा, अनीता शर्मा, नीता जोशी और मीनू जोशी सहित अन्य सदस्यों ने अतिथियों का स्वागत किया.

# महिला होकर भी खतरों से भरे खनिज विभाग की कमान संभाल रहीं देविका परमार...

**उज्जैन।** गिट्टी, पत्थर, कंकड़, रेती और मिट्टी जैसी खनिज संपदाओं की सुरक्षा करना केवल प्रशासनिक जिम्मेदारी नहीं बल्कि कई बार जोखिम भरा दायित्व भी बन जाता है। इन चुनौतियों के बीच उज्जैन की जिला खनिज अधिकारी देविका परमार अपने अदम्य साहस, कर्त्तव्यनिष्ठा और दृढ़ संकल्प के साथ न केवल अवैध उत्खनन पर लगाम लगा रही हैं, बल्कि मध्यप्रदेश शासन को करोड़ों रुपये का राजस्व भी दिला रही हैं।

खनिज विभाग को प्रशासन के सबसे चुनौतीपूर्ण विभागों में माना जाता है। यहां कार्रवाई का मतलब अक्सर शक्तिशाली लोगों से टकराव भी होता है। रसूखदारों से लेकर नेताओं, मंत्रियों, विधायकों और सांसदों तक की सिफारिशें और दबाव सुनना इस विभाग का हिस्सा माना जाता है। लेकिन इन सब परिस्थितियों के बीच देविका परमार ने अपने कर्त्तव्य से कभी समझौता नहीं किया।

दिन हो या रात, सूचना मिलते ही वे टीम के साथ मौके पर पहुंच जाती हैं। अवैध रूप से चल रहे डंपरों को रोकना, जेसीबी और अन्य भारी मशीनों पर कार्रवाई करना, जुर्माना लगाना और अवैध खनन पर नियंत्रण करना उनके काम का हिस्सा है। खतरों से भरे इस काम में कई बार तनाव और जोखिम भी सामने आते हैं, फिर भी वे पूरी दृढ़ता के साथ अपने दायित्व का निर्वहन कर रही हैं।

खनिज अधिकारियों के लिए यह क्षेत्र कई बार जानलेवा भी साबित हुआ है। प्रदेश के कई जिलों में अवैध खनन को लेकर विवाद, मारपीट और हमलों की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। इसके बावजूद एक महिला अधिकारी के रूप में देविका परमार न केवल अपने स्टाफ की सुरक्षा का ध्यान रखती हैं, बल्कि स्वयं भी हर चुनौती का सामना करते हुए निष्पक्षता से काम कर रही हैं।

महाकाल की नगरी उज्जैन, जो प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का गृह नगर भी है, वहां खनिज विभाग की जिम्मेदारी संभालना अपने आप में बड़ी चुनौती माना जाता है। लेकिन देविका परमार ने अपनी कार्यशैली से यह साबित किया है कि कर्त्तव्य के आगे किसी भी प्रकार का दबाव मायने नहीं रखता। यही कारण है कि उनकी छवि अब तक निर्विवाद और सख्त प्रशासनिक अधिकारी के रूप में बनी हुई है।

# नौकरी के साथ धर्म सेवा जनसेवा को समर्पित डिप्टी कलेक्टर सिम्मी यादव

**उज्जैन।** वर्ष 2019 में मध्य प्रदेश पब्लिक सर्विस कमिशन (एमपीपीएससी) के माध्यम से चयनित होकर प्रशासनिक सेवा में आईं सिम्मी यादव वर्तमान में उज्जैन जिले में डिप्टी कलेक्टर के रूप में कार्यरत हैं। बचपन से ही समाज के लिए कुछ सार्थक करने की प्रेरणा ने उन्हें प्रशासनिक सेवा का मार्ग चुनने के लिए प्रेरित किया। प्रशासनिक सेवा में आने के बाद उनका प्रयास रहा है कि शासन की योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में कार्य करते हुए उन्होंने यह अनुभव किया कि जब महिलाओं को अवसर और सहयोग मिलता है, तो वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन की मजबूत शक्ति बन जाती हैं। प्रशासनिक कार्यों के दौरान कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन जनसेवा का उद्देश्य और लोगों का विश्वास हर कठिनाई को पार करने की प्रेरणा देता है। सीमित संसाधनों में बेहतर व्यवस्थाएं बनाना, लोगों की समस्याओं का समाधान करना और पारदर्शिता के साथ कार्य करना उनकी प्राथमिकता रही है।

सिम्मी यादव को उज्जैन स्थित श्री महाकालेश्वर मंदिर में जिम्मेदारी निभाने का अवसर भी मिला।

# महिला सशक्तिकरण की मिसाल बनीं डॉ. जया मिश्रा

**उज्जैन। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर यदि शहर की ऐसी महिलाओं की चर्चा की जाए जो चिकित्सा, समाज सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं, तो उनमें उज्जैन की सुप्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ और बांझपन विशेषज्ञ डॉ. जया मिश्रा का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। डॉ. जया मिश्रा वर्षों से चिकित्सा सेवा के साथ-साथ समाज में महिलाओं को जागरूक करने और उन्हें मुख्यधारा में लाने के लिए निरंतर कार्य कर रही हैं।**

डॉ. जया मिश्रा उज्जैन स्थित जेके हॉस्पिटल और महाकालेश्वर आईवीएफ सेंटर का संचालन करती हैं। वे जटिल स्त्री रोग संबंधी बीमारियों और उच्च जोखिम वाली गर्भधारण के मामलों को सफलतापूर्वक संभालने के लिए जानी जाती हैं। कई कठिन परिस्थितियों में उन्होंने जटिल ऑपरेशन कर महिलाओं की जान बचाई है और अनेक निसंतान दंपत्तियों की सूनी गोद भरने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

डॉ. मिश्रा उन्हें भी समझाइश देती है जो केवल पुत्र की कामना करते हैं और बेटी को बोझ मानते हैं। उनका मानना है कि बेटी किसी भी परिवार के लिए वरदान होती है और वही परिवार और समाज की असली ताकत है। वे अशिक्षित और ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा और अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए नियमित रूप से प्रयास करती हैं। डॉ. जया मिश्रा का कहना है कि आज भी समाज में पुरुष वर्चस्व वाली सोच कई स्थानों पर मौजूद है, जिसके कारण महिलाओं को बराबरी का स्थान नहीं मिल पाता। ऐसे में महिलाओं को आत्मविश्वास और शिक्षा के माध्यम से आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य से वे समय-समय पर स्वास्थ्य शिविर, जागरूकता कार्यक्रम और सामाजिक गतिविधियां आयोजित करती रहती हैं।

# मंडल अभिभाषक संघ ने मनाया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

**उज्जैन।** विश्वभर में 8 मार्च को मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को रंगपंचमी पर्व के दृष्टिगत मंडल अभिभाषक संघ उज्जैन के सभाकक्ष में 7 मार्च शनिवार को ही मना लिया गया। इस अवसर पर महिला न्यायाधीशों और अभिभाषकों का सम्मान किया गया, जिसके पश्चात संघ में फाग उत्सव भी उल्लास के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश पीसी गुप्ता, विशेष अतिथि वरिष्ठ अभिभाषक मुरारीलाल पाठक तथा विशेष जिला एवं सत्र न्यायाधीश मंजुल पाण्डेय उपस्थित थीं। अध्यक्षता कर रहे संघ अध्यक्ष ओम सारवान ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला न्यायाधीशों और अभिभाषकों को सम्मानित किया जाना बड़े गौरव की बात है। सम्मान समारोह में महिला न्यायाधीशों और अभिभाषकों को दुपट्टा पहनाकर व उपहार देकर सम्मानित किया गया। मंच पर अभिभाषक संघ की पूर्व अध्यक्ष व वरिष्ठ अभिभाषक किरण जुनेजा और नसीम भटनागर आसीन थीं।

इस अवसर पर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश पीसी गुप्ता ने महिला अभिभाषकों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि वे बेखौफ और बिना झिझक के न्यायाधीशों के सामने अपना पक्ष रखें। उन्होंने आश्वस्त किया कि किसी भी प्रकार की परेशानी या झिझक की स्थिति में सभी न्यायाधीश महिला अभिभाषकों को प्रेरित करने का कार्य करेंगे। विशेष सत्र न्यायाधीश मंजुल पाण्डेय ने हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी की सराहना की। कार्यक्रम के दौरान न्यायाधीश पूजा भदौरिया, सोनाक्षी चतुर्वेदी शर्मा, अनुराग शर्मा तथा अभिभाषक व पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र चतुर्वेदी और अजय गिरिया ने भी अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए।

# संघर्ष, अनुशासन और जिम्मेदारी ही पहचान वरिष्ठ जिला पंजीयक ऋतुंभरा द्विवेदी

**उज्जैन।** प्रशासनिक सेवा में कार्य करते हुए कई तरह की जिम्मेदारियों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वर्तमान में मध्यप्रदेश शासन के पंजीयन विभाग में वरिष्ठ जिला पंजीयक के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रही है ऋतुंभरा द्विवेदी। पंजीयन विभाग राज्य के राजस्व संग्रह से सीधे जुड़ा हुआ है, इसलिए यहां कार्य करते समय प्रशासनिक, कानूनी और तकनीकी तीनों प्रकार की समझ की आवश्यकता होती है। विभाग का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शासन को उचित राजस्व प्राप्त हो और आम नागरिक को पारदर्शी एवं न्यायसंगत सेवाएँ मिल सकें।

नवभारत से चर्चा में द्विवेदी ने बताया की पंजीयन विभाग में आने से पहले मैंने लगभग 12 वर्षों तक पुलिस विभाग में सेवा दी है। वर्ष 1998 में उपनिरीक्षक परीक्षा में महिला संवर्ग में पूरे मध्यप्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया और वर्ष 1999 में सूबेदार परीक्षा में भी प्रदेश में शीर्ष स्थान हासिल किया। पुलिस सेवा के दौरान ही राज्य सेवा परीक्षा दी, जिसमें मेरा चयन जिला पंजीयक के पद पर हुआ। उस समय मैं रक्षित निरीक्षक के पद पर कार्यरत थी। पुलिस विभाग में कार्य करते हुए अनुशासन, त्वरित निर्णय लेने की क्षमता और कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखने की सीख है भी इन्हें मिली। यही अनुभव आज भी प्रशासनिक कार्यों में अत्यंत सहायक सिद्ध हो रहा है। पुलिस सेवा में रहते हुए पढ़ाई करना अपने आप में बहुत बड़ी चुनौती थी। विपरीत परिस्थितियां, अवकाश की कमी और अध्ययन के लिए समय न मिल पाना जैसी कठिनाइयों के बावजूद लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्प ने आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

पंजीयन विभाग में कार्य करना एक तकनीकी जिम्मेदारी है, जहां प्रतिदिन कई जटिल प्रकरण सामने आते हैं। कई बार दस्तावेजों में कानूनी जटिलताएं होती हैं, एक महिला अधिकारी के रूप में इस तरह के जिम्मेदारीपूर्ण विभाग में कार्य करना चुनौतीपूर्ण होने के साथ-साथ गर्व का विषय भी है। इनका प्रयास हमेशा यही रहता है कि टीमवर्क और पारदर्शिता के साथ कार्य करते हुए विभाग के राजस्व लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए और नागरिकों को बेहतर सेवाएं मिल सकें।

**एक नजर** मेहनत और समर्पण से लगातार उन्नति के पथ पर हुईं अग्रसर, मिल चुका है राष्ट्रपति पदक

# कर्त्तव्य, साहस और संवेदनशीलता की मिसाल उज्जैन की महिला सीएसपी दीपिका शिंदे

**उज्जैन।** पुलिस सेवा केवल कानून लागू करने का कार्य नहीं, बल्कि समाज में सुरक्षा और विश्वास कायम करने की जिम्मेदारी भी है। इस जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा और साहस के साथ निभाने वालों में उज्जैन पुलिस की महिला सीएसपी दीपिका शिंदे का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। अपनी कड़ी कार्यशैली, तेज़ निर्णय क्षमता और अपराध के प्रति सख्त रुख के कारण वे प्रदेश में एक सशक्त पुलिस अधिकारी के रूप में पहचान बना चुकी हैं।

लगभग ढाई दशक पहले पुलिस विभाग में सब इंस्पेक्टर के रूप में कदम रखने वाली दीपिका शिंदे ने अपने समर्पण और मेहनत से लगातार आगे बढ़ते हुए आज एक प्रभावशाली अधिकारी के रूप में स्थान बनाया है। प्रशिक्षण के बाद उन्होंने प्रदेश के अलग-अलग स्थानों पर सेवाएं दीं और कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभालीं। वर्तमान में वे उज्जैन के माधवनगर क्षेत्र में सीएसपी के रूप में कार्यरत हैं और कानून व्यवस्था बनाए रखने में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

दीपिका शिंदे की कार्यशैली ने उन्हें प्रदेश स्तर पर पहचान दिलाई। इंदौर में बालिकाओं की सुरक्षा और जागरूकता के लिए चलाए गए वी केयर फॉर यू अभियान ने समाज में सकारात्मक संदेश दिया। इस पहल के माध्यम से छात्राओं में सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया गया, जिसकी सराहना प्रशासन और समाज दोनों स्तरों पर हुई।अपराधों की जांच में उनकी दक्षता भी कई बार सामने आई है। इंदौर में चर्चित अश्लेषा देशपांडे हत्याकांड के खुलासे में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिसके बाद उन्हें विशेष रूप से सराहा गया। जटिल मामलों को सुलझाने की क्षमता के कारण उन्हें विभाग में आउट ऑफ टर्न प्रमोशन भी मिला।अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई के कारण दीपिका शिंदे की पहचान एक साहसी पुलिस अधिकारी के रूप में भी बनी है। कुख्यात चड्डी-बनियान गिरोह के साथ हुई मुठभेड़ों में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और दो बड़े एनकाउंटर उनके खाते में दर्ज हैं। इन कार्रवाइयों ने प्रदेश में सक्रिय अपराधियों के खिलाफ सख्त संदेश दिया।महिलाओं और छात्राओं की सुरक्षा के लिए चलाए गए मजनू अभियान के दौरान भी उन्होंने सख्ती दिखाई। स्कूल-कॉलेज के आसपास मनचलों पर कार्रवाई कर उन्हें सार्वजनिक रूप से चेतावनी दी गई, जिससे शहर में सुरक्षा का माहौल मजबूत हुआ।

दीपिका शिंदे को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए राज्य और केंद्र स्तर पर कई सम्मान प्राप्त हुए हैं। साइबर अपराधों की जांच में उल्लेखनीय कार्य के लिए उन्हें रुस्तम जी अवार्ड से सम्मानित किया गया। वर्ष 2021 में भारत सरकार के गृह मंत्रालय की ओर से उत्कृष्ट सेवा पदक मिला, वहीं 15 अगस्त 2025 को उत्कृष्ट सेवा के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया।